डॉ. वसंत केशव मोरे
एम्.ए.पी.एच्.डी.
अध्यक्ष – हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर
तथा
पूर्व- अधिष्ठाता कला संकाय
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

# प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि सौ. सुपर्णा गंगाधर संसुद्धी ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्. फिल्. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु – शोध – प्रबंध 'अ. गो. शेवडेजी के उपन्यासों में चित्रित नायिकाओं का मनोविज्ञान' मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है। जो तथ्य इस लघु–शोध–प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं। सौ. सुपर्णा गंगाधर संसुद्धी के प्रस्तुत शोधकार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

डॉ. वसंत केशव मोरे
शोध - निर्देशक

कोल्हापुर
दिनांक: २८ मई १९९२

"भारतीय संस्कृति के मूलभूत मूल्यों के प्रति मुझे घोर आस्था है और मेरा दृढ़ विश्वास है कि उनमें ऐसे चिरंतन तत्व हैं जो विश्व की समस्याओं का समाधान कर सकते हैं और पृथ्वी पर ईश्वर का साम्राज्य उतारने की क्षमता रखते हैं ।"

– अनंत गोपाल शेवड़े ।

## -:- अनुक्रमणिका -:-


**प्रस्तावना :**

**प्रथम अध्याय –**

*** अ.गो. शेवड़ेजी का व्यक्तित्व *** पृ. 2-13

1. जन्म
2. शिक्षा
3. लेखनकार्य का प्रारंभ
4. पत्रकार के रूप में
5. देशभक्त
6. राजनीति में प्रवेश
7. जीवन का दूसरा अध्याय
8. प्रसन्नचित्त स्वभाव
9. कुशल संगठक
10. सम्मान एवं पुरस्कार

**द्वितीय अध्याय –**

*** अ.गो. शेवड़ेजी के उपन्यासों का अल्प परिचय और अन्य साहित्य संपदा *** पृ.14-32

1. बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार के रूप में
2. उपन्यासकार के रूप में
3. कहानीकार के रूप में
4. निबंधकार के रूप में
5. कुशल संपादक
6. सफल अनुवादक

**तृतीय अध्याय** –

**" मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की परंपरा और शेवड़ेजी "** पृ. 33–44

1. प्रेमचंदपूर्व उपन्यास
2. प्रेमचंदयुगीन उपन्यास
3. मनोवैज्ञानिकता (हिंदी उपन्यासों में)

जैनेंद्र , इलाचंद जोशी, अज्ञेय, अ.गो.शेवड़े

**चतुर्थ अध्याय** –

**" अ.गो.शेवड़ेजी के उपन्यासों में चित्रीत नायिकाओं का मनोविज्ञान "** पृ. 45–93

अ) मनोवैज्ञानिक उपन्यास

ब) शेवड़ेजी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास

क) शेवड़ेजी के उपन्यासों मे चित्रित नायिकाओं का मनोविज्ञान

1. " मृगजल " उपन्यास की नायिका, "मरियम" का मनोविज्ञान
2. " निशागीत " उपन्यास की नायिका, "नर्स सुशीला" का मनोविज्ञान
3. " पूर्णिमा " उपन्यास की नायिका, "पूर्णिमा" का मनोविज्ञान
4. " मंगला " उपन्यास की नायिका, "मंगला" का मनोविज्ञान
5. " अधूरा सपना " की नायिका, "सुहासिनी" का मनोविज्ञान
6. " इंद्रधनुष " की नायिका, "वीणा" का मनोविज्ञान

**उपसंहार** – पृ. 94–98

**संदर्भग्रंथ सूची** –

**परिशिष्ट – 1** शेवड़ेजी के जीवन के कुछ अमूल्य क्षणों की चित्रावली ।

***

## -=:: प्रस्तावना ::=-

उपन्यास समाज, परिवेश, और उसमें मानव के स्थान का समग्र चित्रण करता हैं । समाज के मध्यवर्ग की समस्त चित्ररेखाएँ हिन्दी उपन्यासों की बुनियाद में पाई जाती है । मध्यवर्ग, आर्थिक स्थिति और उसके परिवार की केंद्रबिंदु स्त्री, इन परिधियों में से देखा जाय तो प्रेमचंद युग से इसका प्रारंभ दिखाई देता हे । प्रेमचंदजी ने आर्थिक परिस्थितियों से जखड़े हुए "होरी" ( गोदान ) जैसे पात्रों का अमर चित्रण किया है । प्रेमचंदोत्तर काल में मध्यवर्ग की स्थिति, विशेषकर नारी-सुधार का प्रचलन, नारी के प्रति किए गए सामाजिक अन्याय, का समग्र चित्रण हिंदी उपन्यासों का प्रमुख उद्देश्य रहा । साथ ही नारी के अंतर्मन का, मनोवैज्ञानिकता की खोज-बीन का कार्य जैनेन्द्र, इलाचंद जोशी जैसे उपन्यासकारों ने किया । इसी परंपरा में श्री. अनंत गोपाल शेवड़ेजी ने अपने उपन्यासोंद्वारा नारी स्वरूप के अंकन में मनोवैज्ञानिकता का दृष्टिकोन अपनाया शेवड़ेजी ने इन नारियों का चित्रण जीवन के अनुभवों पर आधारित किया है जिससे ये नारियाँ स्वाभाविक रूप से वास्तविक जीवन के निकट लगती है । इसलिए ये उपन्यास "कला जीवन के लिए" दृष्टिकोन को व्यक्त करते हुए नजर आते हैं ।

शेवड़ेजी के इन ग्यारह उपनयासों में से छः उपन्यास मनोवैज्ञानिक है

| | |
|---|---|
| 1. मृगजल | 4. मंगला |
| 2. निशा-गीत | 5. अधूरा-सपना |
| 3. पूर्णिमा | 6. इंद्रधनुष |

शेवड़ेजी के प्रस्तुत उपन्यास, जीवन की वास्तविकता का को पूरी-पूरी तरह व्यक्त करते हैं । अपने आदर्शों को फ्रायड़ जैसे मनोवैज्ञानिक आधार के साथ भी

व्यक्त करने में शेवड़ेजी सफल हुए हैं । शेवड़ेजी ने अपने उपन्यासों में नायिकाओं के मनोव्यापार का चित्रण सूक्ष्मता से किया है ।

बी.ए. के लिए मुझे "निशा-गीत" और "मंगला" इन दो उपनयासों का अध्ययन करना पडा । उस समय पढ़े इन उपन्यासों में शेवड़ेजी ने किया नारी-व्यथा का उद्घाटन, मनोवैज्ञानिक ढंग से किये गए व्यक्ति रेखाटन मुझे बहुत ही प्रभावित कर कए थे । इसलिए प्रस्तुत विषाय का चुनाव मैंने किया ।

शेवड़ेजी अहिंदी भाषी लेखक होने के कारण साहित्य क्षेत्र में मानो वे उपेक्षित से रह गए । उनके साहित्य पर आज तक जो अध्ययन किया गया वह भी कम है । "श्री बाँकेबिहारी भटनागर" व्दारा संपादित - "शेवड़े : व्यक्तित्व, विचार और कृति" तथा "श्री.शंना. गुंजीकर, व्दारा "अनंत गोपाल शेवड़े और उनका साहित्य" ये दो कृतियाँ मुझे प्राप्त हुई । श्री शेवड़ेजी के उपन्यासों की"नायिकाओं का मनोविज्ञान"इस दृष्टि से अध्ययन अभी तक नहीं हुआ है इसलिए मेरे अध्ययन के लिए मैंने इस विषाय का चुनाव किया ।

अध्ययन के लिए मैंने यह विषाय चुना तब प्रारंभ में मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न थे -

1. क्या शेवड़ेजी मनोवैज्ञानिक लेखकों की परंपरा में आ सकते है ?

2. मनोवैज्ञानिक चित्रण करते समय शेवड़ेजी उत्शृंखल बनकर अपना आदर्शवादी दृष्टिकोन भूल तो नहीं जाते ?

3. क्या शेवड़ेजी नायिकाओं को विद्रोही रूप में प्रस्तुत करते हुए भारतीय परंपरावादी स्त्री की प्रवृत्तियाँ भूल जाते हैं ?

ये प्रश्न मेरे सामने थे । इन प्रश्नों के उत्तर उपसंहार में दिए हैं ।

प्रस्तुत विषय-विवेचन के लिए मैंने अध्याय विभाजन इसतरह किया है -

**प्रथम अध्याय -**

प्रथम अध्याय में मैंने "शेवड़ेजी का व्यक्तित्व" का परिचय दिया है । किसी भी कलाकार की कला का कलाकार के जीवन से घनिष्ठ संबंध होता है । शेवड़ेजी के व्यक्तित्व के पहलू बहुमुखी प्रतिभा, कुशल संगठक, भारतीय संस्कृति के प्रति घोर आस्था, तथा गाँधीजी के और विनोबाजी भावे के प्रति श्रध्दा, इन गुणों का प्रत्यय उनके साहित्य में झलकता हुआ दिखाई देता है ।

**द्वितीय अध्याय**

द्वितीय अध्याय में शेवड़ेजी के साहित्य को लेकर - "शेवड़ेजी के उपन्यासों का अल्प परिचय और अन्य साहित्य संपदा" है । इस अध्याय में शेवड़ेजी के ग्यारह उपन्यासों का अल्प परिचय दिया है तथा कहानी, निबंध, पत्रिकाओं का नाम-निर्देशन किया है ।

**तृतीय अध्याय -**

तृतीय अध्याय - "मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की परंपरा और शेवड़ेजी" में मनोवैज्ञानिक परंपरा में शेवड़ेजी का स्थान निर्धारण किया है। जैनेंद्र, इलाचंद जोशी तथा अज्ञेय के बाद के मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारोंमें शेवड़ेजी का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है । प्रस्तुत अध्याय में इसका विवेचन है ।

**चतुर्थ अध्याय -**

चतुर्थ अध्याय में मनोवैज्ञानिकता का संक्षेप में परिचय तथा शेवड़ेजी के किन मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का अध्ययन किया है यह बताया है और उसके बाद शेवड़ेजी के छः मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की नायिकाओंका मनोविज्ञान का विस्तार से विवेचन किया है ।

यह मनोवैज्ञानिक चित्रण चारित्रिक गुणों के आधारपर किया है ।

उपसंहार अंत में है । ऊपर विवेचित प्रश्नों के उत्तर तथा संपूर्ण अध्ययन का संक्षेप में सारांश दिया है ।

## -=:: ऋणनिर्देशन ::=-

यह लघु प्रबंध प्रस्तुत करने के लिए मुझे अनेकों की सहायता लेनी पड़ी है । प्रस्तुत शोधकार्य मैंने श्रध्देय गुरुवर्य डा.व्ही.के. मोरेजी के पांडित्यपूर्ण निर्देशन में लिखा है । अपनी अत्यंत कार्य-व्यस्तता के बावजूद भी उन्होंने, समय समय पर बहुमूल्य निर्देशों के व्दारा विषय के अध्ययन में मुझे गति और उत्साह दिया इसलिए मैं डा. मोरेजी की अत्यंत कृतज्ञ एवं ऋणी हूँ ।

इसके साथ ही अन्य प्राध्यापक, आदरणीय प्रा.कणबरकर, प्रा.तिवले, प्रा.वेदपाठक, प्रा श्रीमती रजनी भागवत आदि ने मुझे जो सहकार्य किया उसके लिए मैं उनकी हार्दिक आभारी हूँ ।

प्रा.डा. गो.रा. कुलकर्णी तथा प्रा. सौ.अवंतिका कुलकर्णीजी की शुभकामनाएँ और आशिर्विवाद मेरे साथ रहें । समय समय पर उन्होंने किये मार्गदर्शन के लिए मैं उनके प्रति भी आभारी हूँ ।

प्रा.सौ.जाधव, प्रा.मोकाशी (इस्लामपूर) प्रा.सौ.दातार इन्होंने ग्रंथ उपलब्धी में मेरी जो सहायता की उसलिए मैं उनके प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ ।

प्रा.डॉ.शं.ना. गुंजीकरजी व्दारा भी मुझे प्रबंध एवं कुछ पुस्तकें प्राप्त हुई । उन्होंने मेरी निस्वार्थ भाव से जो मदद की इसलिए मैं उनकी अत्यंत ऋणी हूँ ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय से मुझे अनेक ग्रंथों का लाभ हुआ जिससे मेरे अध्ययन की गति अबाधित रही । इसलिए ग्रंथालय के पदाधिकारीयों की भी

मैं कृतज्ञ हूँ ।

मेरे परिवार के सदस्यों ने भी इस लघुप्रबंध के लेखन के लिए मुझे उत्साह दिया अतः उनकी भी मैं आभारी हूँ । इस लघुप्रबंध के लिए आर्टिस्ट श्री.सुभाष दडगेजी ने जो सहायता की उसके लिए उनकी भी मैं ऋणी हूँ । मेरे सहपाठी तथा सहेलियों को भी मैं धन्यवाद देती हूँ ।

प्रस्तुत शोधकार्य का टंकलेखन अत्यंत सुचारू रूप में श्री.कराले जी ने और उनके सहकारीयों ने किया है । उनकी भी मैं ऋणी हूँ ।

इस लघु प्रबंध को मैंने यथाशक्ति परिपूर्ण करने का प्रयत्न किया है इससे विद्वज्जनों को यदि थोडा भी आनंद प्राप्त हुआ तो मैं मेरे श्रम सार्थक समझूंगी ।

कोल्हापुर

दि.:

**सौ. संशुध्दी सुपर्णा गंगाधर**

**( शोध छात्रा )**

.....।/-